चित्रों का होमवर्क

दिलीप चिंचालकर

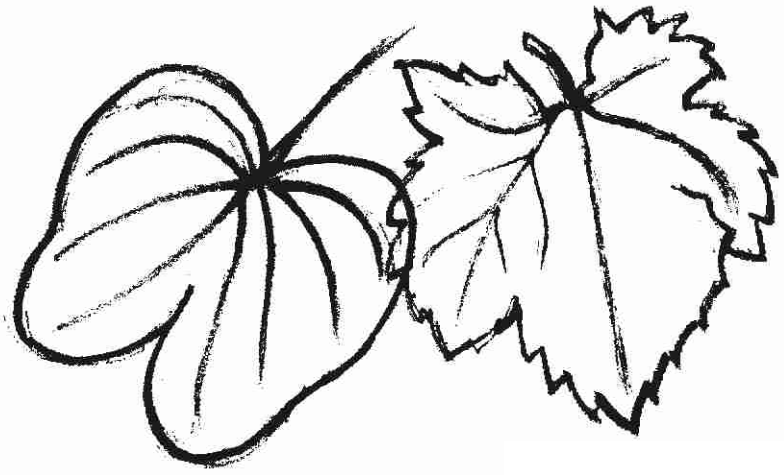

कुछ समय पहले इन्हीं पन्नों पर हमने तय किया था कि अब से रोज़ चित्र बनाया करेंगे – जब भी खाली समय मिले तब दस-दस-पाँच-पाँच मिनट के लिए। इस तरह रोज़ फ़ुर्सत के आधा-पौन घण्टे का उपयोग कुछ सीखने में हो सकता है।

इसके तीन फायदे हैं। पहला यह कि हमारे अन्दर ठहरे हुए पुराने विषय बाहर निकल जाते हैं (जैसे, पहाड़-झोंपड़ी-नदी के दृश्य, इमारतें-कारें वगैरह)। दूसरा यह कि हमें पुरानी वस्तुओं को नई तरह से बनाने का मौका मिलता है। हम आसपास की चीज़ों को ध्यान से देखने और समझने लगते हैं। नए विषय का मतलब किसी दूसरे बड़े विषय पर कूदना नहीं है। विश्व शान्ति, पर्यावरण पर संकट, मेरा देश महान वगैरह बड़ी बातें हैं। अभी इन्हें बड़ों के लिए छोड़ दो।

हम शुरुआत करते हैं इस्त्री, मिक्सर, पानी के मग्गे जैसी वस्तुओं से। यह मज़ाक नहीं है। कहने को ये मामूली हैं मगर इन्हें बनाने में सीधी-तिरछी रेखाओं और गोलाइयों का अभ्यास होता है। अब पेड़ के पत्तों को ही लो। जब मन से किसी पेड़ का चित्र बनाना हो तो हम वही मछलीनुमा आकार के पत्ते बनाते हैं। कभी बगीचे में जाकर देखो। गोल, लम्बे, अर्ध्दचन्द्राकार, कंगूरेदार... हँसिए के आकार के और भी जाने कैसे-कैसे पत्ते मिलेंगे। उन्हें बनाने का अभ्यास करो। ऐसा कि जब शहतूत की पत्ती बनाओ तो वह गुड़हल की न लगे। और गुलाब की पत्ती गुलाब की ही लगे। इससे तरह-तरह के आकार तुम्हारी काबू में आ ही जाएँगे। कुछ अनसोची नई बातें भी ध्यान में आने लगेंगी। जैसे, पीपल की पत्ती का सिरा तो लम्बा और घुमावदार है ही उसका डण्ठल भी लम्बा है। तभी ज़रा-सी हवा चलने पर धूप में उसके पत्ते झिलमिल करने लगते हैं। आम के पत्ते की दो ओर की गोलाइयाँ एक

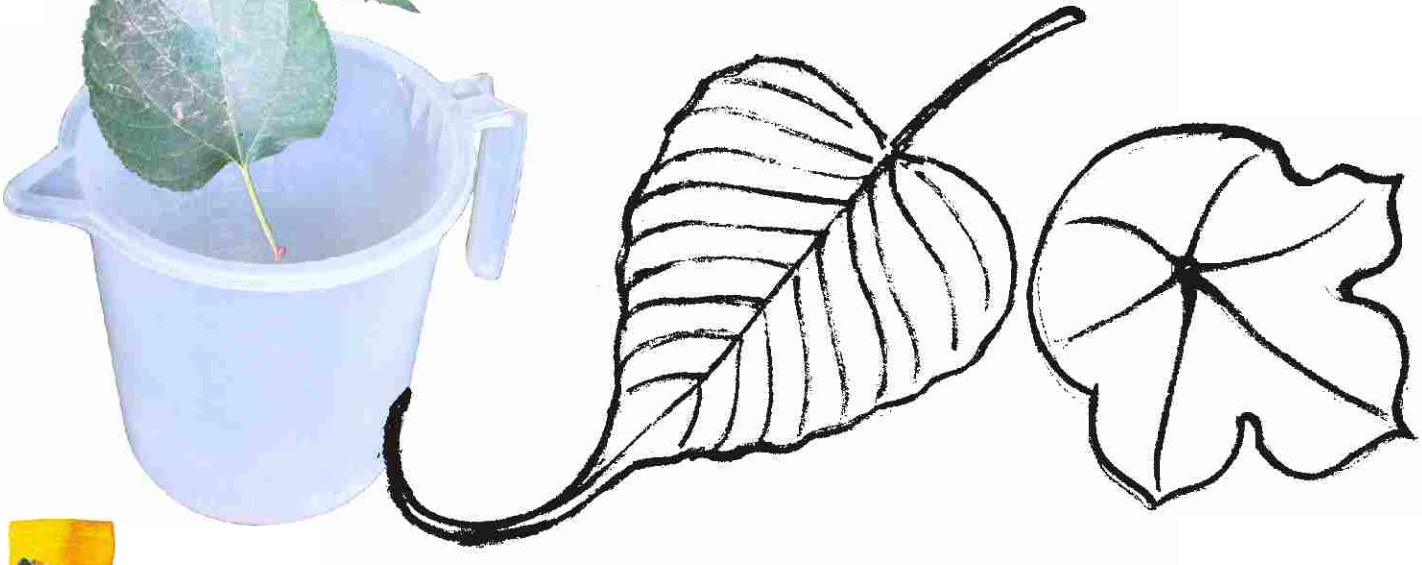

दूसरे के विपरीत होती हैं, तभी सिरे पर मिलकर नोक बनाती हैं। नीम की पत्ती की दोनों गोलाइयाँ एक ही और घूमती हैं फिर भी सिरे पर जाकर मिलती हैं। केले का एक अकेला पत्ता सौ सामान्य पत्तियों जितनी जगह घेरता है तो गुलमोहर में एक ही डण्ठल से निकली सैकड़ों छोटी-छोटी पत्तियाँ मिलकर एक पत्ता बनता है। पत्तियों के बाद फूल, तना और टहनियों से भी जान-पहचान बढ़ाना ठीक रहेगा।

यह मत समझना कि यह तो विज्ञान की पढ़ाई हो गई। सो तो है लेकिन यह चित्रकला भी है। लियोनार्दो दा विंची की बनाई मोनालिसा की तस्वीर दुनिया भर में प्रसिद्ध है। उसी विंची ने मनुष्य के शरीर की माँसपेशियों का इतना अध्ययन किया था जितना एक पढ़ा-लिखा डॉक्टर भी नहीं करता होगा। चित्रकार जॉन मिलेस कोई भी बड़ा चित्र बनाने से पहले उसमें आने वाली तमाम वस्तुओं की खूब ड्राइंग कर लेता था। ओफिलिया (एक पेंटिंग जिसका ज़िक्र हमने अगस्त माह की चकमक में किया था।) बनाने से पहले उसने कई प्रकार के फूल-पत्तियों और पक्षियों के नमूने बनाए थे। यह चित्र बनाने से पहले का होमवर्क ही है। चकमक

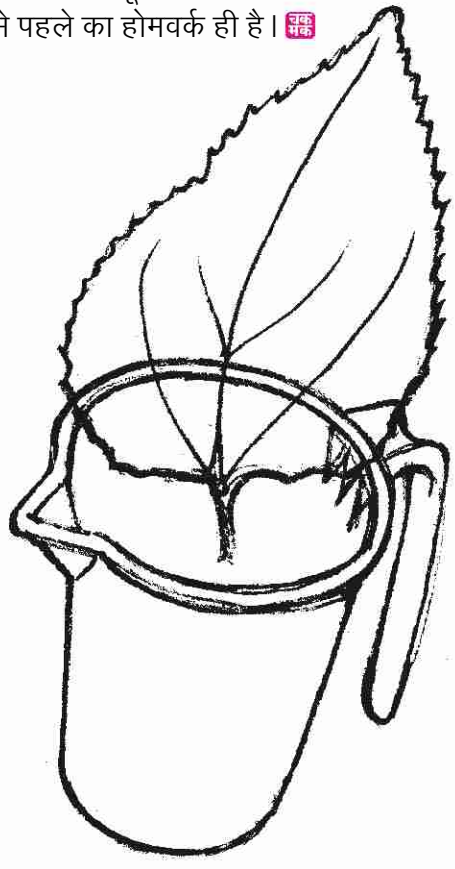

फोटो: दीबा

इन दो तस्वीरों के कुल कितने अन्तर हैं?

आप पाधी

– बैक्टीरिया क्या है, वनस्पति या जीव?

– एक ऐसा "रूम" बताओ जिसमें न तो फर्श है, न खिड़की और ना ही दरवाज़े?

– इन शब्दों को ध्यान से देखो:
रत-तर, सर-रस, नम-मन, सब-बस, नाम-मना, पता, ताप
ऐसे कितने ही शब्द होंगे? क्या खासियत है इनमें? अक्षरों का क्रम बदल देने से नया शब्द बनता है – नया सार्थक शब्द। क्या तुम ऐसे ही बीस शब्द ढूँढ सकते हो?

– एक अंक है जिसे किसी भी संख्या से गुणा करो, गुणनफल से प्राप्त संख्या के सभी अंकों को आपस में जोड़ो तो वापस वही अंक मिल जाता है। क्या तुम बता सकते हो कि हम किस अंक की बात कर रहे हैं?